"मेरे श्यामा जी की रसना"

—श्री श्याम सुन्दर, अमृतसर

धाम के धनी श्री राज जी महाराज अपने आनन्द अंग श्री श्यामा जी श्री सुन्दर साथ जी की शोभा का वर्णन इस काल-माया की दुनिया में नहीं करना चाहते थे क्योंकि यह दुनिया इस शोभा के सुनने के लायक ही नहीं है पर अपने आनन्द अंगों को मूल घर की याद दिलाने के लिए अपने श्री मुख से वाणी कही जिसे श्री इन्द्रावती ने श्री मुख वाणी में कहा :—

न कहेवाय माया माहें आ वाणी,
पण साथ माटे कहे वाणी।
साथ आवसे रुदे आणी,
ते में नेहचे कहयूं जाणी॥

मैं (मेरी आत्म) अपनी श्यामा जी की रसना का किस तरह वर्णन कर सकती हूँ। मेरे सतगुरु श्यामा महारानी जी ने माया में धँसी हुई अपनी आत्म को इस नरकों से छुड़ाकर अपने चरणों में लिया। यह अपार मेहर कृपा वही जानते हैं, क्यों मुझपर की। जिस वाणी से भूली हुई आत्म को अपने घर की याद आती है। अपने मूल मिलावे में बैठे श्री राज श्यामा जी सुन्दरसाथ जी को परआत्म निहारती है। जिस वाणी से ईश्वरी सृष्टि को अपने घर की सुध मिलती है। जिस वाणी से जीव सृष्टि को मुक्ति मिलती है। दुर्भाग्य है यह हमारा कि कभी—कभी हम सुन्दर साथ के सामने वाणी को तोड़ मरोड़ कर पेश किया जाता है जिससे अर्थ का अनर्थ हो जाता है। विद्वानों की चरणरज के लिए हम गृहस्थी लोग तरसते हैं पर ऐसी वाणी को पढ़ सुन कर मन दुखी और शर्मिन्दगी से नीचे हो जाता है।

श्री सुन्दर साथ जी मैं माया में धक्के खाती रही आपने चरणों में लिया, सत्य लिख रही हूँ, आपकी हूं, क्षमा करना। पिछले दिनों अपने धर्म की ही एक पत्रिका में "श्री प्राणनाथ जी की जन्म जयन्ती" का विवरण लिखा था जिसे पढ़कर प्रसन्नता की अपेक्षा निराशा एवं सुख के स्थान पर दुख की अनुभूति हुई। मेरे व्यक्तिगत विचारों में इस प्रकार के प्रचार से सामान्य सुन्दर साथ दुविधा एवं शंकाओं का शिकार होने लगता है जबकि वह सही व सच्चे मार्ग दर्शन की आकांक्षा

Nijanand App

करता है— कबीर जी अपनी वाणी में कहते हैं–

जो पूत किसी का होत है,
वह साहिब किसी का नाहें ।
जो साहिब सबका होत है,
वह पूत किसी का नाहे ।।

यह लट्ठ वह सभी धर्मों के ऊपर पहले ही लेकर बैठे हैं । जिस प्राणनाथ जी के दर्शनों के लिए ब्रह्मा, विष्णु, महेश आज भी तरस रहे हैं । जिस प्राणनाथ जी के दर्शनों के लिए देवी देवता आज भी तरस रहे हैं । जिस प्राणनाथ जी के दर्शनों के लिये विद्वान, तपस्वी, साधू आज भी तरस रहे हैं । जो सबको आवागमन के चक्कर से छुड़ाने आये हैं । उस श्री प्राणनाथ जी की हमारी सम्प्रदाय के कुछ विदवत लोग जन्म जयन्ती मना रहे हैं । हम गृहस्थी सुन्दर साथ अर्जी करते हैं कि हमें बतायें कि क्या जिसका जन्म और मरण होता है वह कभी प्राणनाथ हो सकता है । आप किस प्राण नाथ जी का जन्म मरण मनाते हैं । क्या प्राण नाथ जी भी दो बार हैं? प्राणनाथ की कौन सी वाणी है । जिस श्री जी की वाणी को हम सुन्दर साथ मन्दिर में पढ़ते हैं उसमें तो कहीं भी श्रीराज जी का जन्म नहीं है । श्री मूल बीतक में कहीं भी श्रीराज जी का जन्म नहीं है । मुझे पूर्ण विश्वास है हमारे सर के ताज महाराज श्री हम सुन्दर साथ को जरूर व जल्दी अपने लेखों में बतायेंगे ।

श्री सुन्दर साथ जी हम किस कृष्ण को मन्दिर में जाकर अविधारते हैं क्योंकि आज हमारे हर मन्दिर में श्रीराज जी श्यामा जी के साथ बाँसुरी लगी होती है जबकि श्री मुखवाणी में कहीं भी नहीं लिखा हुआ कि परमधाम में श्रीराज श्यामा जी के पास बाँसुरी है ।

परमधाम में इश्क रबद होने के पश्चात् हम सब द्वापर युग व कलयुग में इस काल-माया के ब्रह्माण्ड में आये । इससे पहले लाखों, करोड़ों (अगणित) बार दुनिया बनी और मिट गई । श्रीराज जी के सतअंग अक्षरब्रह्म का काम ही दुनिया बनानी और मिटानी है । वह श्याम जी का मन्दिर जहाँ श्री देवचन्द्र जी १४ वर्ष नेष्ठा बद्ध श्रीमद्-भागवत सुन रहे थे तो आप मूलसरूप ने दीदार दिया और कहा, आप मुझे जानते हो श्री देवचन्द्र जी ने कहा ऐसा लगता है आप मेरे खाविन्द हो, तौ कहा तू कौन आई इत क्यों कर, नहीं बता सके । आप मूल सरूप ने श्री मुख से कहा

[२३

मैं कालमाया के ब्रह्माण्ड में अब जाहिर हो रहा हूँ—सब ज्ञान और लीलाओं के सहित । इससे पहले द्वापर में श्रीराज जी

Nijanand App

आए क्योंकि उनका नाम श्रीकृष्ण था इसलिए इस ब्रह्माण्ड में उसी राशी और नक्षत्र में आये ताकि अपना नाम श्रीकृष्ण ही रख सके। विष्णु ने तन धारण किया अक्षर ब्रह्म की आत्म श्रीराज जी के जोश ने प्रवेश किया। ब्रज में ११ साल ५२ दिन रहे—हाथों में बाँसुरी रखी। ५२ दिनों के पश्चात् इस कालमाया के ब्रह्माण्ड को छोड़ कर योगमाया में रास करने के लिए गए। अक्षर की आत्म श्रीराज जी का जोश ने योगमाया के ब्रह्माण्ड में योगमाया के तन को धारण किया। इस ब्रह्माण्ड में जिस तन का नाम श्रीकृष्ण था अब उसमें सिर्फ विष्णु की शक्ति रह गई। योगमाया में अपना नाम बाँके बिहारी रखा, हाथों में बाँसुरी रही। रास करके वापसी परमधाम चले गए। अक्षर ब्रह्म ने इन दोनों को अखण्ड मांगा। श्रीराज जी ने दोनों को अखण्ड किया। ब्रज में श्रीकृष्ण वाले तन में सिर्फ विष्णु की शक्ति थी—ब्रज को अखण्ड किया। विष्णु गोलोक में आज भी बाँसुरी लिए अखण्ड हैं और गोलोक कृ ण (बालमुकुन्द) कहलाते हैं। आज भी सबलिक में बाँकेबिहारी हाथों में बाँसुरी लिए अखण्ड हैं लेकिन हमारे मूल मिलावे में श्रीराज जी के पास कोई बाँसुरी नहीं। वह इसलिए लिखा है कि बाँसुरी वाले कृष्ण कहाँ अखण्ड हैं और हमारे मन्दिरों में किसकी पूजा होती है ?

"क्या श्रीराज जी को मिलना चाहते हो तो बाँसुरी वाले की पूजा करनी चाहिए।"

तो हमारे मन्दिरों में किसलिए बाँसुरी रखी जाती है—क्या हमारे यहाँ गौलोक कृ ण व बाँकेबिहारी कृष्ण की पूजा होती है ? अगर हकीकत में अनादि अक्षरातीत को अविधारते हैं तो उनके साथ बाँसुरी क्यों लगाई जाती है ? मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे धर्म के आचार्य श्री, महाराज श्री, विद्वत मण्डल अपने श्रीमुख से जरूर बतायेंगे और लेखों में हमें पढ़ने को मिलेगा।

अपने सतगुरु महाराज श्री जी की अपार कृपा से आप समस्त धाम दर्शन परिवार व उसके पढ़ने वाले सुन्दर साथ के चरणों में अर्जी कर रहा हूँ कि इन्हीं विषय पर अपनी श्रीमुख वाणी को सामने रखते हुए विचार प्रकट करें ताकि आप सबकी चरणरज लेने का ठीक शुभ अवसर सदा प्राप्त रहे। सदा गल्तियाँ करता हूँ आपका हूँ—क्षमा करना। सर्व सुन्दर साथ को पल-पल प्रणाम स्वीकार रहे इसी विश्वास से।

Nijanand App